Punjab Files
ਪੰਜਾਬੀ ਸਨਾਤਨੀ ਦੀ ਆਵਾਜ਼

YEAR 1980

निरंकारी बाबा की हत्या के आरोप में पांच व्यक्ति गिरफ्तार

नई दिल्ली, 25 अप्रैल (प्रे.यू.हि.भा.) : पुलिस सूत्रों ने दावा किया है कि निरंकारी प्रमुख बाबा गुरबचन सिंह की हत्या पूर्व नियोजित एवं निर्धारित षड्यन्त्र के आधार पर की गई।

निरंकारियों से मिले संकेतों के आधार पर आज पुलिस ने तिलक मार्ग पर इंडिया गेट के पास एक मैटाडोर गाड़ी रोक कर उसमें सवार पांच व्यक्तियों को हिरासत में ले लिया। उनके पास एक रायफल, एक

● गिरफ्तार व्यक्तियों में से एक की शिनाख्त ● उसे कल निरंकारी बस्ती में देखा गया था ● तीन पुलिस दल पंजाब, मध्य प्रदेश और भोपाल रवाना।

बन्दूक, कुछ जीवित कारतूस भी मिले। बाबा गुरबचनसिंह की हत्या में उनका हाथ होने का संदेह है। निरंकारियों के अनुसार हत्यारे 5 थे, जिनमें 40 से 45 वर्ष की आयु के चार सिख भी शामिल थे।

सूत्रों ने कहा कि निरंकारी सम्प्रदाय के जो विरोधी निरंकारियों में घुस गए थे, इस हत्या के पीछे उन्हीं का हाथ है।

सूत्र बाबा गुरबचन सिंह की हत्या को 19 मार्च की उस घटना से भी जोड़ते हैं, जब दुर्ग में बाबा दुर्घटना से बच गए, पर उनका एक शिष्य मारा गया था।

50 वर्षीय गुरबचन सिंह तथा एक स्वयं सेवक प्रताप सिंह पर, उत्तरी दिल्ली में निरंकारी हैड-क्वार्टर में बाबा के बैड रूम के सामने कार से उतरते समय कुछ अज्ञात लोगों ने अत्यन्त निकट से स्वचालित शस्त्र से गोली चलाकर गत रात्रि उनकी हत्या कर दी थी।

यह हत्याकांड छानबीन के लिए अपराध शाखा को दे दिया गया है। केन्द्रीय गृहमन्त्री ज्ञानी जैल सिंह ने घटना की जांच के लिए सी.बी.आई. को आदेश दे दिए हैं।

बाबा गुरबचन सिंह की अन्त्येष्टि रविवार को विद्युत शव दाह गृह में की जाएगी। शव यात्रा रविवार को प्रातः सात बजे निरंकारी मंडल से प्रारम्भ होगी। बाबा गुरबचन सिंह अपने पीछे पत्नी कुलवन्त कौर, चार बेटियां, एक बेटा छोड़ गए हैं।

गोली चलने के समय प्रताप सिंह उन्हें बचाने के लिए आगे आया तो उसके पेट में दो गोलियां मार दी गई। प्रताप सिंह की वहीं मृत्यु हो गई।

बाबा के पीछे कार से उतर रही उनकी पत्नी बाल-बाल बच गई।

भिंडर ने बताया कि जांच से ज्ञात हुआ है कि आक्रमणकारी बाथरूम की खिड़की से पहली मंजिल के एक कमरे में घुस गए और कमरा अन्दर से बन्द कर लिया। उन्होंने कमरे की बत्तियां बुझा दीं, परदे

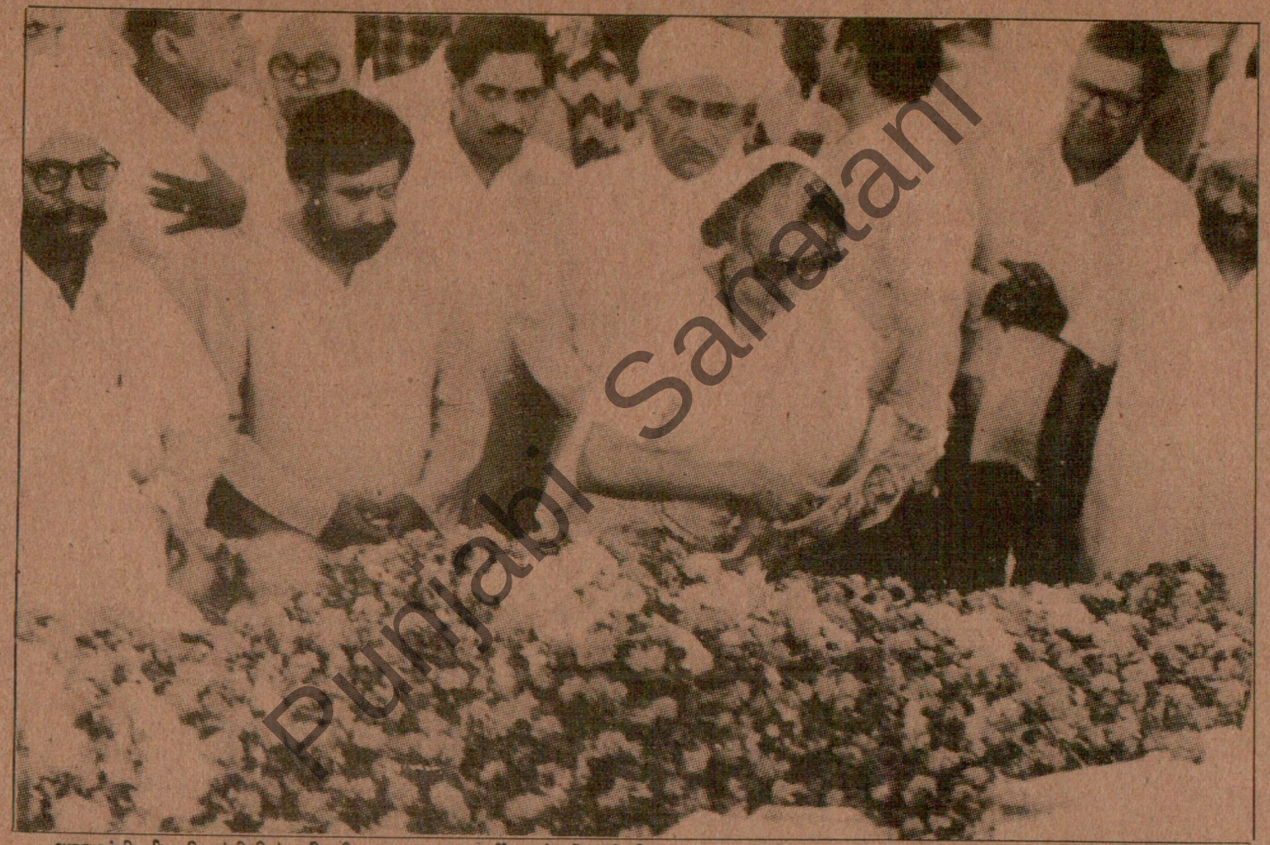

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी निरंकारी चीफ बाबा गुरबचन सिंह को, जिनकी बीरवार रात नई दिल्ली में हत्या कर दी गई, भावांजलि अर्पित करते हुए।

गिरा दिए और बाबा की प्रतीक्षा करने लगे। बाबा पहाड़गंज के एक निरंकारी समागम को संबोधित करने गए थे।

आक्रमणकारियों ने आतंक फैलाने के उद्देश्य से दो हथगोले भी फैंके, पर फैंके जाने से पूर्व उनकी फायरिंग पिनें नहीं निकाली गई थीं, अतः वे फटे नहीं।

बाबा की हत्या के उपरान्त आक्रमणकारियों ने पहली मंजिल की एक जाली खोल दी और मंडल की चार दीवारी के पीछे की ओर के एक ड्रेन पाइप के सहारे उतर गए और अंधकार का लाभ उठा कर फरार हो गए।

पुलिस ने एक लकड़ी का बक्सा बरामद किया, जिसमें आक्रमणकारी हथियार व अन्य औजार साथ लाये थे। एक जोड़ी जूते, एक शर्ट, खाली कारतूस भी बरामद हुए हैं।

बाबा व प्रताप सिंह के शव का आज प्रातः पोस्ट-मार्टम किया गया। उनका शव मंडल के मुख्य हाल में रखा गया है और अंतिम दर्शन के लिए वहां मेला-सा लगा है।

भवन के बाहर हमेशा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की एक टुकड़ी तैनात रहती है, लेकिन उसने भी हत्यारों को नहीं पकड़ा। पुलिस ने घटना-स्थल पर मिले हथगोलों को सीमैंट की बोरियों से ढक दिया और सेना के

अंतिम संस्कार कल होगा, नया उत्तराधिकारी रविवार को ● बाबा की हत्या में भिंडरांवाला का हाथ होने का आरोप ● जांच के लिए जैल सिंह ने सी. बी. आई. को आदेश दिए ● पड़ोसी राज्यों का प्रशासन सतर्क, महत्व-पूर्ण सूत्र मिले, अपराध शाखा के दस्ते पंजाब रवाना।

विशेषज्ञों को बुलाया है।

पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा किया और हत्यारों की खोज के लिए तूफानी अभियान आरम्भ कर दिया। दिल्ली की सीमाओं, रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों पर नाकेबन्दी कर दी गई है।

पुलिस के हाथ कुछ अत्यंत ही महत्वपूर्ण सुराग लगे हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बाबा गुरबचन सिंह कल रात लगभग साढ़े दस बजे पहाड़गंज से एक सत्संग में भाग लेकर लौटे तो वहां पहले से मौजूद हत्यारों ने उन पर कारबाईन "राईफल" से फायर किए। ऐसा प्रतीत होता है कि बाबा को दो गोलियां लगीं, जिनमें से एक गोली उन्हें सीने के बाईं ओर हृदय के ऊपर लगी, उन्हें ठीक उस समय गोली लगी जब वह कार से बाहर आ रहे थे। गोली लगते ही बाबा गुरबचन सिंह जमीन पर गिर गए। उनकी कार का दरवाजा खोलने वाले सेवादल के श्री प्रताप सिंह की बगल में एक गोली लगी। गोली उनकी बगल में एक और लगी और चीरती हुई दूसरी ओर निकल गई। बाबा गुरबचन सिंह को तीर्थराम अस्पताल लेजाया गया जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया। उनके अनुयायी श्री कुलबीर सिंह के पैर में और उनकी पत्नी के भी हाथ में गोली लगी।

पुलिस को घटनास्थल पर कारबाईन के 6 खाली चले हुए कारतूस, एक बिना चला कारतूस और एक रिवाल्वर का चला हुआ कारतूस मिला है।

ऐसा प्रतीत होता है कि हत्यारे काफी समय से घात लगाए बैठे हुए थे। जांच से पता चलता है कि हत्यारों की संख्या पांच के करीब थी और वे दोपहर से ही निरंकारी भवन में घूम

(शेष पृष्ठ 6 पर)

Punjabi Sahitani

निरंकारी बाबा की हत्या

(3 पृष्ठ का शेष)

रहे थे । जिनमें से चार सिख और एक अन्य युवक था । ऐसा लगता है कि निरंकारी बन कर ये लोग भवन के अन्दर प्रवेश पाने में सफल हो गए । इन लोगों ने कई दिनों से योजना बनाई हुई थी और भवन के चप्पे-चप्पे को जानते थे तथा बाबा गुरबचन सिंह के कार्यक्रमों और उनके बारे में हर बात से परिचित थे । उन्हें यह तक पता था कि बाबा की कार कहां आकर रुकती है और उन पर कहां से निशाना लगाया जा सकता है ।

ऐसा लगता है कि वह भवन के मुख्य दरवाजे से अन्दर आए थे और अपने साथ लकड़ी का बक्सा लाए थे क्योंकि वह बक्सा उस खिड़की से बाहर नहीं आ सकता, जहां से हत्यारे फरार हुए । बक्सा एक फुट चौड़ा, तीन फुट लम्बा और 9 इंच लम्बा था ।

हत्यारे "गुरबचन सिंह निवास" के कमरा नम्बर 14 में घात लगाए बैठे थे । उन्होंने निरंकारी बाबा पर कमरे के अन्दर से ही खिड़की में से गोली चलाई और इसके बाद बाथ-रूम की लोहे की जाली तोड़ कर पाईप के सहारे पीछे की गली से भाग निकले । ऐसा लगता है कि कमरे के अन्दर दो व्यक्ति थे और उनके अन्य साथी दूसरे स्थानों पर फैले हुए थे ।

पुलिस को कथित हत्यारों के पैर और उंगलियों के निशान मिले हैं । पुलिस के खोजी कुत्ते गली से होते हुए निरंकारी कालोनी के पीछे बांध और उसके बाद पक्की सड़क तक गए । इससे प्रतीत होता है कि वहां से हत्यारे किसी वाहन में बैठ कर फरार हो गए ।

हत्यारों ने पहली मंजिल पर स्थित कमरा नंबर 14 से लगभग छः मीटर से गोली चलाई । ऐसा लगता है कि उन्हें गोली चलाने का काफी अभ्यास था और उनका निशाना काफी अचूक था । दो गोलियां निरंकारी बाबा को, दो गोलियां प्रतापसिंह को और एक गोली उनकी कार में लगी । बाबा निरंकारी के साथ कार में उनकी पत्नी राज माता कुलवन्त कौर, मामा गोपाल सिंह प्रेमी और निरंकारी मिशन की अखिल भारतीय कार्यसमिति के अध्यक्ष गोविन्द सिंह और कार

प्रवक्ता ने कुछ लोगों पर अपना संदेह व्यक्त किया है निरंकारी भवन के बाहर बैनर लगे हुए हैं कि इस मामले में संत भिंडरांवाला की गिरफ्तार किया जाए । निरंकारी बाबा पर इससे पूर्व पांच कथित हमले हुए थे । उन पर पहला हमला पंजाब के गुरदासपुर जिले के घुमाऊं नामक स्थान पर हुआ था । उन पर गोली चलाई गई थी । दूसरा हमला अमृतसर में चौक मेहता और तीसरा हमला भी अमृतसर में 15 अप्रैल, 1978 को हुआ था । इसके बाद कानपुर और अंत में दुर्ग में उन पर हमला हुआ था, जब उनकी कार को एक ट्रक से टक्कर मार कर रोका गया था और उन पर गोली चलाई गई थी ।

निरंकारी बाबा की हत्या का समाचार सुनते ही हजारों लोग निरंकारी भवन की ओर चल पड़े । भवन में इतनी भीड़ हो गई कि लोगों को सम्भालना कठिन हो गया । भवन में हृदय-विदारक दृश्य पैदा हो गया । महिलाएं, बच्चे और पुरुष तक बिलख-बिलख कर रो रहे थे ।

निरंकारी बाबा के शव का पोस्ट मार्टम करने के बाद उसे नौ बजे भवन में एक चारपाई पर रख कर लाया गया ।

मिशन

निरंकारी मिशन के प्रवक्ता ने बताया कि मिशन के प्रांगण स्थित कमरा नम्बर 14, जहां पर मेहमान ठहराये जाते हैं, की खिड़की के शीशे को तोड़ कर वहां से हत्यारों ने बाबा को गोली का निशाना बनाया ।

श्री गुरबचन सिंह के ड्राईवर किशनपाल ने कहा, "मैं ज्यों ही मोटर गाड़ी को भवन के प्रांगण में लेकर आया और प्रताप सिंह सेवादार ने मोटर गाड़ी का दरवाजा खोला ही था कि गोलियों की बौछार शुरू हो गई और बाबा जो सम्भवतः मोटर कार के थोड़ी दूर नीचे लेट गए ।" मैंने सोचा शायद वे अपने बचाव के लिए लेटे हैं परन्तु वे खून से लथपथ थे ।

प्रवक्ता के अनुसार 6 गोलियां चलाई गई थीं और तीन मिनट के अन्दर घटनाक्रम पूरा हो गया ।

प्रवक्ता के अनुसार चार लोगों ने अपने मुंह ढके हुए गोलियां चलाईं । मार्ग में एक पिस्तौल तथा

सी. बी. आई. को आदेश

गृह मन्त्री ज्ञानी जैल सिंह ने कहा है कि इस घटना से उन्हें गहरा धक्का लगा है । उन्होंने घटना की जांच के लिए सी. बी. आई. को आदेश दे दिया है । गृहमन्त्री ने कहा कि हत्यारों को पकड़ने की पूरी-पूरी कोशिश की जा रही है । इस संबंध में पड़ोसी राज्यों के प्रशासन को सतर्क कर दिया गया है । उन्होंने कहा कि बाबा के परिवार के संरक्षण के लिए कठोर कदम उठाए जा रहे हैं । उन्होंने निरंकारी मंडल के मुख्यालय जाकर अपनी संवेदना भी व्यक्त की ।

राजधानी के अधिकांश अकाली नेताओं ने निरंकारी प्रमुख की हत्या पर कोई भी टिप्पणी करने से इंकार कर दिया ।

अकाली दल मास्टर तारा सिंह गुट के अध्यक्ष जत्थेदार संतोखसिंह से जब इस सम्बन्ध में प्रतिक्रिया पूछी गई तो उन्होंने कहा कि मुझे कुछ नहीं कहना है ।

सिख बंदरहुड के अध्यक्ष बख्शी जगदेव सिंह ने भी कोई टिप्पणी करने से इंकार कर दिया ।

भिंडरांवाला का हाथ

सन्त निरंकारी मंडल की कार्य-समिति के अध्यक्ष श्री गोबिन्द सिंह ने दिल्ली के पुलिस आयुक्त श्री प्रीतम सिंह भिंडर से भेंट कर निरंकारी मंडल के एक उग्र विरोधी धार्मिक नेता संत भिंडरांवाला पर बाबा गुरबचन सिंह की हत्या का षड्यंत्र करने का संदेह प्रकट किया और उसकी गिरफ्तारी की मांग की ।

श्री भिंडर ने श्री गोबिन्द सिंह को यह आश्वासन दिया बताते हैं कि हत्या के पीछे किसी का भी हाथ होगा, उसके विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही करने से संकोच नहीं किया जाएगा ।

श्री गोबिन्द सिंह ने बाद में संवाददाताओं से बातचीत करते हुए ऐसे कुछ समाचारपत्रों के विरुद्ध भी कड़ी कार्यवाही करने की मांग की, जो निरंकारियों के विरुद्ध समाज में घृणा का वातावरण निर्माण करने के लिए दोषी हैं ।

खंडन

दिल्ली के पुलिस आयुक्त श्री प्रीतम सिंह भिंडर ने इन आरोपों का खंडन किया है कि निरंकारी बाबा की हत्या की सूचना मिलने के बाद पुलिस घटना स्थल पर देर से पहुंची ।

Punjabi Sanatan